सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी स्नेह मिलन के पश्चात् ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. रेवादास भाई एवं ब्र.कु. प्रकाश भाई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

शांतिवन। राजयोगिनी ईशू दादी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ उपस्थित हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा अन्य भाई-बहनें।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मनुष्य की आत्मा मनुष्य योनि में ही जाती है

भोगना कौन भोगता... मनुष्य या पशु-पक्षी...!!!

कर्म और फल एक-दूसरे के पूरक हैं। इसीलिए व्यक्ति चाहे अपनी चालाकी से कहीं से छूट भी जाए लेकिन अपने कर्मों से कभी छूट नहीं सकता है। शास्त्रों के अंदर यह बात आती है कि मनुष्य जैसा कर्म करेगा वैसी योनी में उसको जाना पड़ेगा। अपने फल को भोगने के लिए पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि कितनी योनियों में जाना पड़ता है। 84 लाख योनियों से गुज़र कर लास्ट में उसको मनुष्य जीवन प्राप्त होता है। अब इस बात को अच्छी तरह से हम समझें कि मान लो कि एक व्यक्ति ने बुरा कर्म किया और उसके फलस्वरुप कर्म का फल भोगने के लिए उसको 84 लाख योनियों से गुज़रना पड़ा। लास्ट में उसको मनुष्य जन्म मिलता है इसलिए कहते हैं मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। लेकिन सोचने की बात तो यह है कि मान लो मैंने कोई बुरा कर्म किया इसलिए मुझे पशु योनि में जाना पड़ा अब पशु योनि में अगर गई तो अपना कर्म का फल भोगने के लिए कहते हैं, मान लो व्यक्ति ने कोई हिंसक कर्म किया तो उसको हिंसक योनि मिलेगी, कोई बिल्ली की तरह चोरी करके दूध पी जाती है या ऐसा चोरी से खा लेती है तो उसको दूसरी योनि में बिल्ली की योनि प्राप्त होती है। अब मान लो कि एक व्यक्ति ने चोरी की और उसके फलस्वरूप उसको वह योनि प्राप्त हुई, जहाँ उसको चोरी से खाना पड़ता है। तो फल कैसे हुआ? क्योंकि फल उसको कहा जाता है कि जहाँ व्यक्ति को डीप रियलाइज़ेशन हो कि यह कर्म गलत था, यह कर्म मुझे नहीं करना चाहिए था। तब तो उसके संस्कारों में परिवर्तन आएगा लेकिन अगर उसको वही योनि मिली या हिंसक कर्म किया, इसलिए हिंसक योनि में जाना पड़ा उसको, तब वहाँ उसके संस्कार परिवर्तन होंगे या हिंसा के संस्कार और दृढ़ बनेंगे? सोचने कि बात है!

साथ में हम देखते हैं कि मान लो कि सारे फल भोग करके 84 लाख योनियों से गुज़र कर फिर जब मानव बनता है तो मनुष्य हर

> पशु-पक्षी योनि में तो खाली शारीरिक भोगना होगी। आज पशु-पक्षियों को कोई टेंशन तो नहीं है। और मनुष्य को जितनी टेंशन होती है उस हिसाब से कितना टेंशन में जीता है। मनुष्य इतना ही नहीं शारीरिक भोगना, मानसिक भोगना और इमोशनल अत्याचार, अनेक प्रकार की भोगनाओं से गुज़रता है...

रीति से संपूर्ण होना चाहिए ना! लेकिन कोई बच्चा जन्म से ही लूला, लंगड़ा, अंधा, बहरा पैदा होता है। अब जन्मते ही उसने कौन-सा कर्म किया? जन्मते ही तो ऐसा कोई कर्म नहीं हुआ ना, जिसकी वजह से ऐसे पैदा हुए।

आज की दुनिया में तो यहां तक सुनने को मिलता है कि एक बच्चा गर्भ में है और गर्भ में उसके ऊपर ऑपरेशन किया जा रहा है। अब जो बच्चा पैदा ही नहीं हुआ, जीवन का आरंभ ही नहीं किया तो उसके पैदा होने से पहले ही इतनी भोगना, इतनी यातना से गुज़रना यह कौन से कर्म का फल है? पूर्व जन्म के कर्म का फल कहें तो वो भोग करके आया न कि 84 लाख योनियों से गुज़र के। आज हम देखते हैं कि एक बच्चा गोल्डन स्पून इन माउथ है तो दूसरे बच्चे को दूध भी नसीब नहीं होता। जन्मते ही यह दोनों बच्चों के अंदर इतना अंतर क्यों है? यही कहेंगे कि कर्मों की गति अति गुह्य है।

आज हम आपको ये स्पष्ट कर दें कि किसी भी मनुष्य की आत्मा हर योनि में नहीं जाती, मनुष्य की आत्मा मनुष्य योनि में ही जाती है और उसी में रहकर अपने कर्मों का फल भोगती है। दूसरी बात, हम यह क्यों समझें कि पशु योनि या पक्षी योनि भोगना की योनि है। आज पक्षियों को देखो मस्त गगन में उड़ते हैं, कौन-सी भोगना है उसको? ऊंचे गगन में आकाश में उड़ रहे हैं, मौज कर रहे हैं। और मनुष्य को देखो, मनुष्य योनि में कितने प्रकार की भोगनाएं हैं। पशु-पक्षी योनि में तो खाली शारीरिक भोगना होगी। आज पशु-पक्षियों को कोई टेंशन तो नहीं है। और मनुष्य को जितनी टेंशन होती है उस हिसाब से कितना टेंशन में जीता है। मनुष्य इतना ही नहीं शारीरिक भोगना, मानसिक भोगना और इमोशनल अत्याचार, अनेक प्रकार की भोगनाओं से गुज़रता है तभी तो मनुष्य कभी-कभी इतना तंग हो जाता है कि जीवन का अंत करने का सोच लेता है, सुसाइड कर लेता है। कभी सुना हमने कोई पशु या पक्षी ने सुसाइड किया? नहीं ना! वह तो खुश है अपनी योनि में। तो भोगना की योनि कौन-सी है? मनुष्य योनि पशु-पक्षी से भी कई गुना अधिक भोगना की योनि है। इसलिये आज के बाद हम यह न समझें कि यह भोगना कि योनि है।

- क्रमशः

साहेबगंज-मुज़फ्फरपुर(बिहार)। विधायक राजू सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन।

पी.यू.आर.सी.-ब्रह्मपुर(ओडिशा)। 'उत्कृष्ट प्रशासन के लिए मूल्य एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषयक अभियान का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए खलिकोट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. प्रफुल्ल कुमार महांति, एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल की अध्यक्षा प्रो. डॉ. सुचित्रा दास, प्रमुख पत्रकार सुदीप भाई, राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी तथा अन्य।

गोरखपुर-उ.प्र.। खत्री सभा द्वारा आयोजित बैसाखी महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर ब्रह्माकुमारीज़ के भाहपुर गोरखपुर स्थित सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. पारुल बहन को उल्लेखनीय सामाजिक सेवाओं के लिए 'सम्मान पत्र' देकर सम्मानित करते हुए डॉ. संजीव गुलाटी,वरिष्ठ दंत चिकित्सक एवं संरक्षक खत्री सभा, डॉ. हेमंत चोपड़ा,अध्यक्ष,खत्री सभा, सरदार जसपाल सिंह,अध्यक्ष जटाशंकर गुरुद्वारा कमेटी, सुभाष सेठी एवं हरगोविंद भंडारी,प्रतिष्ठित व्यवसायी तथा अन्य।

आगरा-ईदगाह(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के कला एवं संस्कृति प्रभाग तथा नृत्य ज्योति कथक केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस पर आयोजित 'कला संवाद' कार्यक्रम में डॉ. ज्योति खंडेलवाल,कथक नृत्यांगना, डॉ. देवाशीष गांगुली,संगीतज्ञ, डॉ. रेखा कक्कड़,चित्रकार, डॉ. ऋतु गोयल,साहित्यकार, डॉ. अशोक सिंह,आर्टिस्ट, रिमझिम,एंकर एवं उपन्यासकार, ब्रिज खंडेलवाल और डॉ. महेश धाकड़,वरिष्ठ पत्रकार, ब्र.कु. अमर, ब्र.कु. अश्विना, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. आशु व अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

सोनपुर-ओडिशा। 'वैल्यूज़ एंड स्पीरिचुअलिटी फॉर बेटर गवर्नेंस' कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं बायें से ब्र.कु. ज्योति बहन, निहार रंजन कंहार,सीडीओ-कम-ईओ,जिला परिषद, अमरेश कुमार पण्डा,एस.पी., सूर्यनारायण दास,कलेक्टर, ब्र.कु. श्वेता बहन,ओआरसी दिल्ली तथा श्रीमति निशी पूनम मिंज,एडीएम,सुबर्णपुर।

बरेली-सिविल लाइंस(उ.प्र.)। आई एम ए लेडीज़ क्लब में नारी शक्ति कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में क्लब प्रेसिडेंट बहन आशा राम जी, सेक्रेट्री डॉ. मोनिका, डॉ. विदुषी, कोषाध्यक्ष विनीता जी, ब्र.कु. पार्वती बहन, ब्र.कु. नीता बहन, डॉ. जया, ज्योति जी, निधि जी, मधु जी तथा अन्य गणमान्य महिलायें।